पूर्णब्रह्म स्तोत्रम्

पूर्णब्रह्म स्तोत्रम्
पूर्णचन्द्रमुखं निलेन्दु रूपम्
उद्भाषितं देवं दिव्यंस्वरूपम्
पूर्णंत्वंस्वर्णँत्वंवर्णंत्वं देवम्
पिता माता बंधुत्वमेव सर्वम्
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम्
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम्
।। १ ।।

कुंचितकेशंच संचितवेशम्
वर्तुलस्थूलनयनंममेशम्
पीनकनीनिकानयनकोशम्
आकृष्टओष्ठं च उत्कृष्टश्वासम्
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम्
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम्
।। २ ।।

नीलाचलेचंचलया सहितम्
आदिदेव निश्चलानंदेस्थितम्
आनन्दकन्दं विश्वविन्दुचंद्रम्
नंदनन्दनंत्वं इन्द्रस्य इन्द्रम्
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम्
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम्
।। ३ ।।

सृष्टिस्थितिप्रलयसर्वमूलं
सूक्ष्मातिसुक्ष्मंत्वंस्थूलातिस्थूलम्
कांतिमयानन्तंअन्तिमप्रान्तं
प्रशांतकुन्तलंतेमूर्त्तिमंतम्
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम्
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम्
।। ४ ।।

यज्ञतपवेदज्ञानात्अतीतं
भावप्रेमछंदेसदावशित्वम्
शुद्धात्शुध्दं त्वंच पूर्णात्पूर्णं
कृष्ण मेघतुल्यंअमूल्यवर्णं
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम्
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम्
।। ५ ।।

विश्वप्रकाशम्सर्वक्लेशनाशम्
मन-बुद्धि-प्राण-श्वासप्रश्वासम्
मत्स्य-कूर्म-नृसिंह-वामनः त्वम्
वराह-राम-अनंतः अस्तित्वम्
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम्
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम्
।। ६ ।।

ध्रुवस्य विष्णुत्वंभक्तस्य प्राणम्
राधापति देव हेआर्त्तत्राणम्
सर्वज्ञान सारंलोक-आधारम्
भावसंचारम्अभावसंहारम्
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम्
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम्
।। ७ ।।

बलदेवसुभद्रापार्श्वेस्थितम्
सुदर्शनसंगेनित्य शोभितम्
नमामि नमामि सर्वांगेदेवम्
हे पूर्णब्रह्म हरि मम सर्वम्
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम्
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम्
।। ८ ।।

कृष्णदासहृदि भाव संचारम् ।
सदा कुरु स्वामी तव किंकरम्
तव कृपा विन्दु हि एक सारम्
अन्यथा हे नाथ सर्व असारम्
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम्
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम् ॥0॥

॥ इति श्री कृष्णदासः विरचित 'पूर्णब्रह्म स्तोत्रं' सम्पूर्णम् ॥

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/34709/title/purna-brahma-stotram

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |